समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।
संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित
मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ सितम्बर २०२४ ● वर्ष : २८ ● अंक : ०३ (निरंतर अंक : ३२७) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

आत्मज्ञान व सर्वांगीण विकासकारी सत्संग

सत्साहित्य वितरण

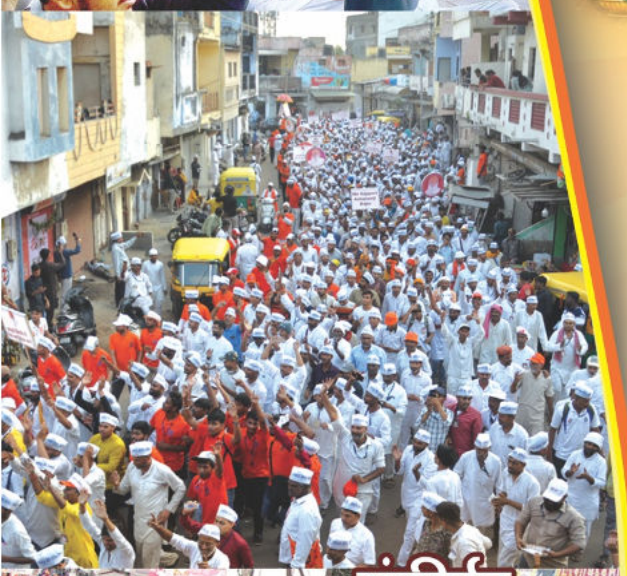

संकीर्तन यात्राएँ

तो आपकी हर रोज दिवाली होगी ३

दीपावली पर्व : २९ अक्टूबर से ३ नवम्बर

ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर जन-जातियों का उत्थान करने में व सम्पूर्ण समाज के विकास में आशारामजी बापू का बहुत बड़ा योगदान हैं । मैं नेपाल की तरफ से माँग करता हूँ कि उनकी जल्दी निःशर्त रिहाई हो ।

– श्री शंकर खराल,
वरिष्ठ उपाध्यक्ष,
विश्व हिन्दू महासंघ, नेपाल

रोटी, कपड़ा, मकान एवं मूलभूत सुविधाएँ लौकिक जीवन की जरूरत है परंतु जीवन में सर्वांगीण विकास करना हो तो योगविद्या, ब्रह्मविद्या की अत्यंत आवश्यकता है । इस ज्ञान के स्रोत हैं पूज्य बापूजी एवं माध्यम बनते हैं उनके शिष्य ।

जीवन की दुपहरी में ही कर लो साक्षात्कार !

(पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के सत्संग-वचनामृत से)

ईश्वर के सिवाय जो कुछ पाओगे वह सब छूट जायेगा, यह पक्का जान लो। शाश्वत के अतिरिक्त जो कुछ भी पाओगे वह नश्वर होगा और नश्वर नाश को प्राप्त करायेगा। अतः शाश्वत को पाने का पक्का निश्चय कर लो और इसके साथ-साथ आप अंतर्दृष्टि विकसित करो कि 'नश्वर क्या है और शाश्वत क्या है ? आ-आकर जो चला जाता है, बन-बनकर जो बिगड़ जाता है, मिल-मिलकर जो छूट जाता है वह नश्वर है पर जो कभी नहीं छूटता, कभी नहीं बिगड़ता, कभी नहीं बदलता वह कौन है ?' उसे खोजो।

जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।

आपके जीवन में निश्चयबल बढ़े और अंतर्दृष्टि विकसित हो। आप अंतर्दृष्टि और निश्चय इन दोनों को ऐसा बना लो कि इसी जन्म में परम ऊँचाई को पा लो ताकि फिर कभी पतन न हो, फिर गिरने का दुर्भाग्य न आये। फिर पराधीनता का मुख न देखना पड़े, प्रकृति किसी माँ के गर्भ में उलटा न लटकाये।

सामान्य जनों के संग में आकर परिस्थितियों के बहाव में मत बहो। हजारों जन्मों का काम आपको एक ही जन्म में पूरा करना है। अतः आपकी समझ, अंतर्दृष्टि और निश्चय सामान्य लोगों से विलक्षण होने चाहिए।

अपने को दूसरों के तराजू में मत तौलो, दूसरों के फ्रेम में फिट होने की कोशिश न करो कि 'उनको अच्छा लगे ऐसा मैं बनूँ।' बनो मत, बनोगे तो बिगड़ोगे। आप तो अपने-आपमें जागो। किसीका अनुकरण करने के चक्कर में मत पड़ो। किसीकी अधीनता मत स्वीकारो।

कोई निंदा करके दबाकर आपको अधीन बनाता है तो कोई प्रशंसा करके फुलाकर। अगर आप उनसे पूछो तो उनका भाव ऐसा नहीं होगा पर सृष्टि का व्यवहार ही ऐसे चलता है। तुम अपने प्रकाश में जियो, अपनी ज्योति में जियो।

आत्मारामी गुरु के द्वारा अंतरंग साधना मिल जाय और ईश्वरप्राप्ति का निश्चय पक्का हो जाय तो फिर इस जीवन की शाम होने के पहले तो क्या, जीवन की दुपहरी में ही जीवनदाता का साक्षात्कार हो जाता है। कइयों ने किया है। यह मार्ग ऊँचा है, बड़ा विलक्षण है पर इतना कठिन नहीं है जितना लापरवाह लोगों को लगता है, हलके विचारवालों को लगता है। जिसके विचार ऊँचे हैं और इरादा पक्का है उसके लिए यह रास्ता कठिन नहीं है।

ज्ञान के दीये जलेंगे, अंत:करण साफ-सुथरा होगा... चारों काम आसानी से आप कर सकोगे। बच्चों को कराओ तो पढ़ाई में अच्छे हो जायेंगे और माता-पिता की होनहार संतान होंगे। सभी लोग यह कम-से-कम ८ मिनट रोज करो। ४० दिन का कोर्स कर लो फिर देखो कैसा आनंद होता है, उद्देश्य कितना साफ-सुथरा हो जाता है ! चित्त की प्रसन्नता और आरोग्यता का रस बनेगा। रोग और चिंता ऐसे भागेंगे जैसे सूर्य आते ही रात्रि भाग जाती है।

.....

२९ अक्टूबर से ३ नवम्बर तक दीपावली पर्व है। यदि आप इस पर्व में चार चाँद लगाना चाहते हैं तो दीपावली पर किये जानेवाले ४ मुख्य कार्यों का आध्यात्मिकीकरण कर दें। यह कैसे करें इसके बारे में जानेंगे पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत से :

तेरी रोज मने दिवाली... लौकिक दिवाली आप जरूर मनायें, कोई मना नहीं है लेकिन १२ महीने में एक दिन की दिवाली थोड़ी खुशी देकर चली जायेगी और आप संसार में बैल की नाईं गाड़ी घसीटते-घसीटते ५०, ६०, ७०... दिवालियाँ मनाकर मौत की गोद में सो जायेंगे फिर दूसरा जन्म पायेंगे । ऐसी दिवालियों के साथ अगर आध्यात्मिक दिवाली मन जाय तो आपका तो मंगल होगा, आपका दर्शन करनेवाले का और आपकी राय लेकर उसके अनुसार सोचने-

धर्मांतरण की प्रवृत्ति जारी रही तो बहुसंख्यक हो जायेंगे अल्पसंख्यक :

न्यायालय

ऐसी धार्मिक सभाओं पर तुरंत रोक लगनी चाहिए जहाँ धर्मांतरण हो रहा है और भारत के नागरिकों का धर्म बदला जा रहा है। यह भारत के संविधान के अनुच्छेद २५ के खिलाफ है, जिसमें धर्मांतरण का प्रावधान नहीं है। यह केवल धर्म को मानने, उसका अभ्यास और प्रचार करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। यहाँ 'प्रचार' शब्द का अर्थ बढ़ावा देना है, न कि किसी व्यक्ति को उसके धर्म से दूसरे धर्म में परिवर्तित करना।'

भारतीय संविधान के अनुच्छेद २५ के खिलाफ है धर्मांतरण

हाल ही में हमीरपुर (उ.प्र.) निवासी कैलाश नाम के एक व्यक्ति द्वारा धर्मांतरण किये जाने का मामला उजागर हुआ। यह धर्मांतरणकारी धोखाधड़ी करके कई लोगों को ईसाई धर्म की एक सभा में ले गया, जहाँ उनका धर्मांतरण किया गया।

कैलाश की जमानत-याचिका खारिज करते हुए इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने कहा कि 'यदि इस प्रकार धर्मांतरण की प्रवृत्ति जारी रही तो इस देश की बहुसंख्यक जनसंख्या एक दिन अल्पसंख्यक हो जायेगी।

ऐसी धार्मिक सभाओं पर तुरंत रोक लगनी चाहिए जहाँ धर्मांतरण हो रहा है और भारत के नागरिकों का धर्म बदला जा रहा है। यह भारत के संविधान के अनुच्छेद २५ के खिलाफ है, जिसमें धर्मांतरण का प्रावधान नहीं है। यह केवल धर्म को मानने, उसका अभ्यास और प्रचार करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। यहाँ 'प्रचार' शब्द का अर्थ बढ़ावा देना है, न कि किसी व्यक्ति को उसके धर्म से दूसरे धर्म में परिवर्तित करना।'

कुछ समय पहले सर्वोच्च न्यायालय ने भी धर्मांतरण की दुष्प्रवृत्ति को बड़ी गम्भीरता से लेते

अटूट गुरुप्रेम की मिसाल :

माँ महँगीबाजी

(ब्रह्मलीन मातुश्री श्री माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस : २८ अक्टूबर)

२८ अक्टूबर को पूज्य बापूजी की मातुश्री पूजनीया माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस है। इस दिन अहमदाबाद आश्रम में माँ महँगीबाजी के समाधि-स्थल पर भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। अम्माजी का जीवन गुरुनिष्ठा, दृढ़ श्रद्धा व अडिग विश्वास की मिसाल रहा है। अम्माजी की सेविका सजनी बहन द्वारा बताये गये मधुर संस्मरण :

गुरु-दर्शन की प्यास

श्रीगुरुगीता में आता है :

गुरोर्ध्याननैव नित्यं देही ब्रह्ममयो भवेत्।

'सदा गुरुदेव का ध्यान करने से ही जीव ब्रह्ममय हो जाता है।'

माँ महँगीबाजी का जीवन इस शास्त्र-वचन को प्रत्यक्ष कर देता है। अम्माजी की गुरुभक्ति ऐसी थी कि वे पूज्यश्री के चिंतन, ध्यान में इतनी निमग्न हो जाती थीं कि देह की सुध-बुध खो बैठती थीं। वे बापूजी के दर्शन के बिना एक दिन भी नहीं रह पाती थीं। उनकी ऐसी तड़प देखकर पूज्यश्री ने कहा था कि ''अम्मा ! मैं कहीं भी रहूँ, आप जब भी पुकारोगी मैं तुरंत आ जाऊँगा।''

सत्संग या एकांतवास के दौरान जब गुरुदेव बाहर होते थे तब भी अम्माजी को गुरुदेव के दर्शन होते थे। दूर से बापूजी को देखते ही अम्मा कुर्सी रखवातीं, उनसे बातें करतीं। मुझे बापूजी नहीं दिखते थे, केवल अम्माजी रोती-हँसती दिखती थीं। जिस दिन दर्शन नहीं होते थे तो अम्माजी रोने और जोर-जोर से पुकारने लगती थीं। बोलती थीं : ''सजनी ! आज मैंने कौन-सी गलती कर दी कि मेरे साँईं, मेरे कृपालु, मेरे शहंशाह, मेरे दयालु प्रभु मेरे से रूठ गये ?''

पुकारते-पुकारते वे बेहोश हो जाती थीं।

मैंने एक बार बापूजी से पूछा था कि ''साँईं ! जब दर्शन नहीं होते तो अम्माजी बेहोश क्यों हो

सनातन धर्म की तथ्यात्मक जानकारियाँ

गरुड़ पुराण में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि 'सभी प्राणियों में मनुष्य-योनि परम दुर्लभ है। पाँच इन्द्रियों से युक्त यह योनि प्राणी को बड़े ही पुण्य से प्राप्त होती है। आहार, मैथुन, निद्रा, भय और क्रोध - ये सभी प्राणियों में पाये जाते हैं किंतु विवेक सभीमें परम दुर्लभ है। इस संसार में शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध - इन ५ विषयों की अधीनता में रहनेवाला निश्चित ही दुःखी रहता है और जो प्राणी आत्मा के अधीन है वह निश्चित ही सुखी है।'

८४ लाख योनियाँ

सनातन धर्म के अनुसार जीवात्मा को ८४ लाख योनियों के चक्र से गुजरना पड़ता है। जीवात्मा मोक्ष प्राप्त करके ही इस चक्र से छूट सकता है। 'योनि' का अर्थ है जीव-जाति के प्रकार। इन योनियों को मुख्यतः चार वर्गों में वर्गीकृत किया गया है :

(१) अंडज : जो अंडों से उत्पन्न होते हैं, जैसे - पक्षी।

(२) स्वेदज : जो पसीने से उत्पन्न होते हैं, जैसे - जुएँ, लीख आदि कीड़े-मकोड़े।

(३) उद्भिज्ज : जो बीजों से उत्पन्न होते हैं, जैसे - पेड़, पौधे।

(४) जरायुज : जो गर्भ से जन्म लेते हैं, जैसे - मनुष्य, पशु।

गरुड़ पुराण में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि 'सभी प्राणियों में मनुष्य-योनि परम दुर्लभ है। पाँच इन्द्रियों से युक्त यह योनि प्राणी को बड़े ही

बुद्धि को लगाम लगाने के लिए

सर्वश्रेष्ठ साधन

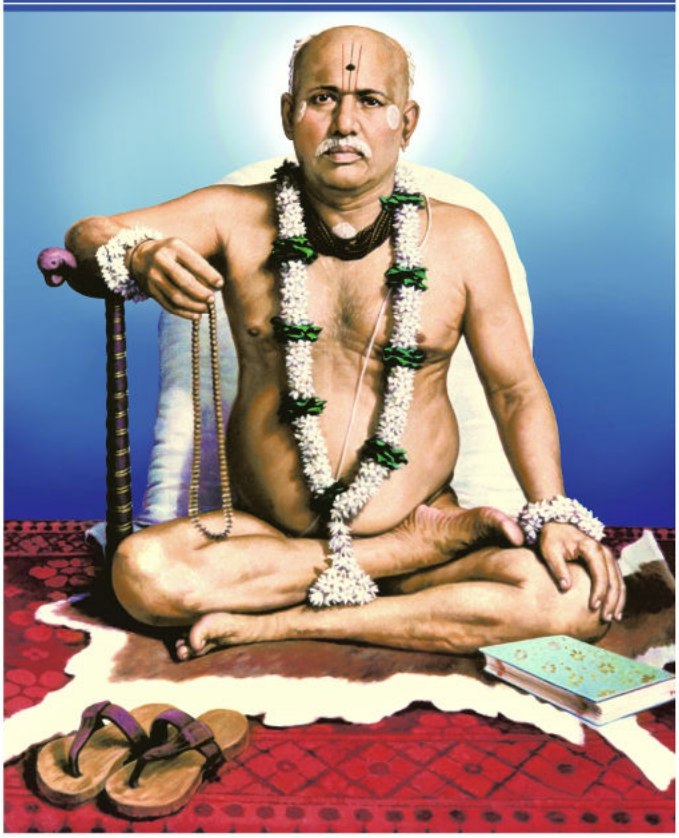

महाराष्ट्र के सातारा जिले के गोंदवले गाँव में ब्रह्मचैतन्य गोंदवलेकर महाराज नाम के ब्रह्मनिष्ठ योगी महापुरुष हो गये । उनकी जीवनी में एक प्रसंग आता है कि एक रात करीब साढ़े ११ बजे महाराज ने नागप्पा नाम के अपने एक भक्त को पुकारा और उससे कहा : ''अरे, लालटेन लेकर मेरे साथ चल ।'' बारिश हो रही थी इसलिए नागप्पा ने छाता भी लिया । महाराज गाँव में कुछ देर घूमे और फिर हनुमान मंदिर के पास के टूटे हुए मकान की तरफ गये । वहाँ दो राहगीर सो रहे थे । महाराज ने उन्हें जगाया और कहा : ''देखो, यह मकान पुराना है । आज बारिश भी हो रही है, हो सकता है रात में कोई दीवार ढह जाय । यहाँ मत सोना, मंदिर में चले जाओ ।''

एक तो चुपचाप उठा और मंदिर में जाकर सो गया किंतु दूसरे ने महाराज की बात को महत्त्व नहीं दिया और वहीं सोता रहा ।

तीन बजने के करीब बारिश का जोर बढ़ा और मकान की दीवार ढहने से वह दबकर मर गया ।

दूसरे दिन जब महाराज को पता चला तो वे बोले : ''अरे ! कल रात को मैंने उसे आगाह किया था परंतु उसने सुना नहीं । लोगों का ऐसा ही होता है । सत्पुरुष की संगति में आज्ञापालन नहीं सीखा तो फिर कुछ भी नहीं सीखा । आज्ञापालन करनेवालों को संकट तो भोगने पड़ते हैं लेकिन अपनी सुविधानुसार भोगने की व्यवस्था हो जाती है । प्रारब्ध का जोर बड़ा विलक्षण है । संकट आने का समय आया कि बुद्धि पर पहले प्रभाव पड़ता है । तब सावधान रहकर सत्पुरुष के कहे अनुसार बर्ताव किया तो दुष्प्रारब्ध (संकट) की तीव्रता कम होगी । दुष्प्रारब्ध के अनुसार बुद्धि में अनुचित विचार आयेंगे तब भी उसके अनुसार बर्ताव करना या न करना आपके हाथ में है । इसलिए तो मनुष्य श्रेष्ठ है ! बुद्धि को लगाम लगाने की युक्ति साध्य करने के लिए आज्ञापालन सर्वश्रेष्ठ साधन है ।''

एक दिन दोपहर ४ बजे के करीब भक्तगण किसी धार्मिक ग्रंथ का श्रवण कर रहे थे । इतने में महाराज उठे और नदी की तरफ बढ़े । कुछ भक्त उनके पीछे-पीछे गये । नदी-किनारे पीपल का एक पुराना वृक्ष था । उसके नीचे दो व्यक्ति आरी से लकड़ी काट रहे थे । महाराज उनके पास गये और बोले : ''यह वृक्ष बहुत पुराना हो चुका है । यह गिरा तो आपको खतरा हो सकता है । बाजू में हटो जल्दी !''

उनका कहना सुनते ही दोनों वृक्ष की छाँव के बाहर हो गये और दो मिनट में ही बड़ी आवाज के साथ वह वृक्ष धराशायी हो गया । दोनों ने महाराज को प्रणाम किया और धन्यवाद देकर चले गये ।

जिन्होंने महापुरुषों के वचनों की अवहेलना की है उन्हें बड़ा घाटा उठाना पड़ा है और जो आज्ञापालन में तत्पर हुए हैं उनका इहलोक व परलोक सँवरा है ।

शरीर-पुष्टिकर प्रयोग

(१) २-३ अंजीर रात को पानी में भिगो दें। सुबह थोड़ा उबाल के खा लें तथा ऊपर से वह पानी पी लें। इससे शक्ति, स्फूर्ति बढ़ती है।

(२) रात्रि में एक गिलास पानी में आधा से एक नींबू निचोड़कर उसमें १२-१५ किशमिश* भिगो दें। सुबह किशमिश खा लें तथा पानी छानकर पी जायें। यह एक शक्तिदायक प्रयोग है।

(३) लोहे की कड़ाही आदि में उबाले हुए १ गिलास (२५० मि.ली.) दूध में १ ग्राम सोंठ डाल के सेवन करने से खून बढ़ता है तथा शरीर पुष्ट होता है।

(४) शुद्ध शिलाजीत का १ कैप्सूल (हरिओम शुद्ध शिलाजीत कैप्सूल*) सुबह खाली पेट दूध के साथ लेने से हड्डियाँ एवं शरीर मजबूत होता है।

(५) मुलेठी का २ ग्राम चूर्ण

कल्याणकारी सत्साहित्य

जीवन में एक नयी आशा का संचार करनेवाला तथा निर्भयता, निश्चिंतता प्रदायक युक्तियों व मन को शांत एवं प्रसन्न रखने के उपायों से सम्पन्न

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य, पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य।

साधना में उन्नति व सुखमय जीवन हेतु

₹ २९

₹ ६

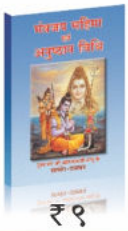
₹ ९

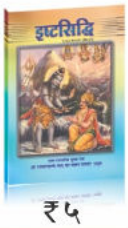

₹ ५

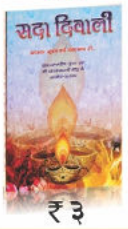

₹ ३

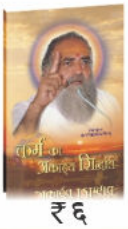
₹ ६

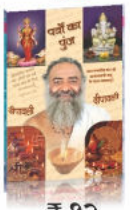
₹ १२

₹ २

यह सत्साहित्य-संग्रह खरीदने पर पायें एक नेत्रबिंदु मुफ्त !

पोषक तत्त्वों से भरपूर, स्वाद में लाजवाब ईरानी मबरूम खजूर

✻ अनेक खनिज तत्त्वों, शर्करा, प्रोटीन्स, फाइबर्स, एंटी ऑक्सीडेंट्स और कई आवश्यक विटामिन्स से युक्त ✻ शक्ति-स्फूर्तिदायक ✻ रक्त, मांस व वीर्य वर्धक ✻ रोगप्रतिकारक शक्तिप्रदायक तथा कैंसररोधी गुण से युक्त ✻ दिमागी व मानसिक कार्यों को बेहतर बनाने में मददगार

बल, आयु-आरोग्य व वीर्य वर्धक आँवला चूर्ण (मिश्रीयुक्त)

यह यौवन को स्थिर रखनेवाली, वीर्यवर्धक, नेत्रों के लिए हितकर, स्मृति-बुद्धिवर्धक, त्वचा के रंग में निखार लानेवाली तथा हड्डियों, दाँतों व बालों को मजबूत बनानेवाली एवं रोगप्रतिकारक शक्तिवर्धक महत्त्वपूर्ण औषधि है । इसके उपयोग से पुरुषों का स्वप्नदोष और महिलाओं का श्वेतप्रदर रोग दूर होता है, ऊर्जा बढ़ती है, शरीर के सार-तत्त्व की रक्षा होती है ।

कपूर

✻ पूजा, आरती आदि धार्मिक कार्यों में यह उपयोगी है । ✻ वातावरण को शुद्ध करनेवाला है । ✻ संक्रामक रोगों से सुरक्षा हेतु कपूर की पोटली बनाकर उसे सूँघना लाभदायी है ।

स्पेशल त्रिफला रसायन

मेधाशक्ति व नेत्रज्योति वर्धक

✻ गीर गाय के घी, त्रिफला, प्राकृतिक शहद तथा अन्य दिव्य औषधियों से युक्त यह कल्प त्रिदोषशामक, इन्द्रिय-बलवर्धक विशेषतः नेत्रों के लिए हितकर, वृद्धावस्था को रोकनेवाला व मेधाशक्ति बढ़ानेवाला है । इसके सेवन से नेत्रज्योति में आश्चर्यकारक वृद्धि होती है । बाल काले, घने व मजबूत बनते हैं । ४० दिन तक विधिवत् सेवन करने से स्मृति, बुद्धि, बल व वीर्य में वृद्धि होती है । ६० दिन तक सेवन करने से यह विशेष प्रभाव दिखाता है ।

आँवला भृंगराज केश तेल

यह बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, रूसी, सिरदर्द, मस्तिष्क की कमजोरी आदि समस्याओं को दूर करता है । बालों की जड़ों को मजबूत करता है व उनको बढ़ाकर उनमें चमक लाता है । दिमाग को ठंडा रखता है व स्मरणशक्ति को बढ़ाता है ।

NOURISH विटामिन B12 टेबलेट Prebiotic

✻ जीवनीय तत्त्वों, अमीनो एसिड्स, खनिजों से भरपूर ✻ विटामिन B12 की कमी से उत्पन्न होनेवाली अनेक गम्भीर समस्याओं से सुरक्षा देनेवाली ✻ पाचनशक्तिवर्धक ✻ प्रौढ़ावस्था व वार्धक्य में विशेष हितकारी

गुटखा, तम्बाकू आदि का व्यसन छुड़ाने के लिए यह टेबलेट लेना हितकर है । (टेबलेट चूसकर लें ।)

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

घर-घर कैलेंडर 'दिव्य दर्शन' अभियान (वर्ष २०२५)

साधकगण एवं युवा सेवा संघ के भाई इस अभियान के अंतर्गत साधकों, मित्रों, रिश्तेदारों एवं परिचितों के घर जाकर उन्हें दीवाल दिनदर्शिका (वॉल कैलेंडर) पहुँचाने की सेवा का लाभ लें।

प्राप्ति : संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवा केन्द्रों पर। ऑनलाइन ऑर्डर हेतु : www.ashramestore.com/calendar सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग), ६१२१०७६१ (युवा सेवा संघ मुख्यालय)

विशेष : प्रति कैलेंडर मूल्य ₹ १५ मात्र। ८ कैलेंडर लेने पर ₹ २० की आकर्षक छूट के साथ आपको देने हैं मात्र ₹ १०० !
२५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम एवं फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं।
२५० से ९९९ तक छपवाने पर मूल्य ₹ १५.५० तथा १००० या उससे अधिक छपवाने पर मूल्य ₹ १४.५० प्रति कैलेंडर रहेगा।

बापूजी की शिष्याओं ने रक्षाबंधन को बनाया राष्ट्ररक्षा व जीवन-उत्थान का माध्यम

आध्यात्मिकता में राष्ट्रहित भी है समाया... १५ अगस्त पर युवा शिष्यों द्वारा देशभक्ति यात्राएँ

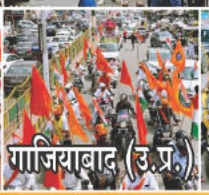

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : लोक कल्याण सेतु | ऋषि प्रसाद | ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक और मुद्रक** : राकेशसिंह आर. चंदेल **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : रणवीर सिंह चौधरी